स्वर्ण की तरह संघर्षों में निखारे जीवनः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, अमृत महोत्सव के मुख्य आयोजन में उमडे श्रावक–श्राविकाएं, वर्ष 2017 का चातुर्मास कोलकाता में करने की घोषणा, दो नंबर के पैसे का उपयोग धार्मिक कार्यों में नहीं करने का आह्वान, भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव किरण माहेश्वरी ने कहा माता–पिता अपने बच्चों को बनाएं संस्कारवान

केलवाः 9 सितम्बर

आचार्यश्री महाश्रमण ने अमृत को परिभाषित करते हुए कहा कि यह स्वर्ण के समान है। जिस तरह से सोने में काफी संघर्ष के बाद निखार आता है उसी तरह व्यक्ति में भी 50 वर्ष की आयु तक पहुंचने के बाद जीवन में निखार आना आवश्यक है। मैंने भी जीवन बहुत संघर्ष किया है। संघर्षों से डरने की आवश्यकता नहीं है। इसका बखूबी सामना करने का साहस जुटाएं। आगे बढने के लिए शक्तियों का नियोजन करना जरूरी है। तेरापंथ के 11 वें अधिष्ठाता शांतिदूत आचार्यश्री ने यह उद्‌गार शुक्रवार को यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान अमृत महोत्सव के तीसरे दिन आयोजित मुख्य समारोह में हजारों की तादाद में उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि साहित्य और राजनीति के माध्यम से भी समाज की अच्छी सेवा की जा सकती है। बस दोनों ही क्षेत्रों में मूल्यवत्ता होनी चाहिए। संघ में अणुव्रत न्यास की ओर से किए जा रहे कार्यों का वर्णन करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि संस्थाओं में मैन और मनी पावर होना आवश्यक है। पैसे के मामले में यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि दो नंबर के पैसों से बचा जाए। इसके स्पर्श से बचने की आवश्यकता है। यह अशुद्ध पैसा है। इसका उपयोग कम से कम धार्मिक कार्यों में न हो। इस पर समाज को विचार करने की जरूरत है। इस अवसर पर आचार्यश्री ने वर्ष 2017 का चातुर्मास पूर्वांचल के प्रमुख शहर कोलकाता में करने की घोषणा की। इस पर समूचा पांडाल ओम अर्हम की करतल ध्वनि से गूंज उठा। उन्होंने कि वे अपनी साधना को सतत् रखने का प्रयास करें। इससे मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होगा और आत्मा का कल्याण संभव हो सकेगा। आदमी का ज्ञान सीमित है। कुछेक ही ऐसे मिलेंगे जो सर्वज्ञ होते है।

आत्म कल्याण पथ पर आगे बढने के लिए साधक का लक्ष्य निर्धारित होना आवश्यक है। व्यक्ति सदैव मोक्ष में जाने का प्रयास करें।
उन्होंने कहा कि अतीन्द्रिय पदार्थ को तर्क से जानने श्रद्धा की प्राप्ति होती है। आगम में जो उल्लेख है उसे मान लिया जाना चाहिए। व्यक्ति में तत्व को जानने की उत्कंठा होती है। इसे पूरा करने का प्रयास हमेशा होना चाहिए। केलवा की भूमि आचार्यश्री भिक्षु की तपोभूमि है। यहीं से तेरापंथ का उद्भव हुआ और आज यह धर्मसंघ विकास के पथ पर अग्रसर हैं। आचार्यश्री डालगुणी तेजस्वी आचार्य थे। उनमें साधना और तपस्या का बल था। वे कठोर अनुशास्ता के रूप में प्रख्यात हुए। गुजरात प्रांत के कच्छ इलाके में तो वे कच्छीपुज के नाम से प्रसिद्ध हुए। गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के काल में ध्यान, चिन्तन और साधना के क्षेत्र में भरपूर कार्य हुआ और आचार्यश्री महाप्रज्ञ के काल में अहिंसा पर विशेष जोर दिया गया।
उन्होंने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ में बहुत करूणा थी। कोमल हृदय थे। उनका मेरे पर बहुत उपकार है। आज ही के दिन उन्हें युवाचार्य बनाया गया था। आज भी गंगाशहर का वह प्रांगण याद आता है, जहां आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। उन्हें आगे बढाने का आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सम्मिलित निर्णय था। उन्होंने मुझ पर बहुत बडा उपकार किया है।
इस अवसर पर आचार्यश्री ने साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा की जीवनी को लेकर साध्वी कनकश्री की ओर से लिखी गई पुस्तक का विमोचन किया और इसे साध्वी प्रमुखा को भेंट की। उन्होंने आदर्श साहित्य संघ और जैन विश्व भारती को साहित्य का खजाना बताते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में जैन समाज को इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि जैनिज्म साथ रहे। समारोह में भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव और राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी ने कहा कि वे आचार्य की बातों से बहुत प्रभावित है। उनके मुखवृंद से निकली बातें हृदय में उतर जाती हैं। गुरु और शिष्य के बीच किस तरह का रिश्ता होता है। इसकी तस्वीर यहीं पर देखी है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा केलवा की धरा पर चातुर्मास करने के अधूरे रहे सपने को पूरा करने के लिए आचार्यश्री महाश्रमण ने पहला चातुर्मास केलवा में करने की घोषणा की। यह गुरु–शिष्य के प्रेम की झलक है। आज के परिवेश में माता–पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चों को सुसंस्कारित बनाने की दिशा में प्रयास करें। उन्होंने गांधीवाद विचारक अन्ना हजारे के लोकपाल बिल को पास कराने को लेकर किए गए अनशन के संदर्भ में कहा कि अन्नाजी ने तो केवल बारह दिन अनशन किया, लेकिन तेरापंथ समवसरण में तो उनके

सरीखे कई अन्ना है जो आठ से लेकर 30 दिन तक के लिए उपवास कर रहे है। उन्होंने कहा कि कुछ दिनों पूर्व उनके मोबाइल पर मैसेज आया था कि अन्नाजी की शादी हो जाती तो शायद वे आन्दोलन नहीं करते, लेकिन यहां तो उपवास कर रहे लोगों को उनकी पत्नियों ने ही प्रेरित किया है। पत्नी कहीं रूकावट नहीं बनती बल्कि वह सुख और दुख में कंधे से कंधा मिलाकर साथ देती है। मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि यह हमारे लिए बडे सौभाग्य की बात है कि हम आज अपने आराध्य का अमृत महोत्सव मना रहे है। ज्यादा खुशी में हम स्वयं को भीतर से नहीं भूला बैठे। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हम जिसका जयकारा करते है इसका मतलब है कि हम उसके प्रति शपथ लेते है। जहां वे चलेंगे हम उनके साथ है। तेरापंथ में आचार्यों की दृष्टि के प्रति आराधना का भाव होता है। गुरु की आराधना से शक्ति मिल सकती है। यह बेजोड है। गुरु की आराधना से विकास रुकेगा नहीं। इस अवसर पर साधु और साध्वियों ने गीत का संगान किया। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि समय अपनी अवस्था के अनुरूप अपना स्थान बना लेता है। सफलता के प्रति योजना का होना आवश्यक है। मन पर नियंत्रण की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि मन को साधने और उसे पारंगत बनाने की जरूरत है। संयोजन करते हुए मुनि मोहजीत कुमार ने बताया कि अमृत महोत्सव का तीसरा चरण 29 जनवरी 2012 को आमेट, चौथा 30 अप्रेल को बालोतरा में आयोजित होगा। इस अवसर पर मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने भी अपने विचार प्रकट किए। कमल सेठिया ने संगीत का संगान किया और गजेन्द्र सोलंकी ने काव्यात्मक प्रस्तुति दी। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने भी विचार प्रकट किए।

एक ही छत के नीचे मिली सुविधाएं
निःशुल्क चिकित्सा शिविर में उमडे ग्रामीण
तेरह सौ रोगियों को मिली चिकित्सा

केलवाः 9 सितम्बर

आचार्यश्री महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में गुरुवार को यहां कॉन्फेन्स हॉल में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। एक ही छत के नीचे 12 रोग विशेषज्ञों की मौजूदगी से बाहर से रोग का उपचार कराने आए ग्रामीण प्रसन्न नजर आए। उन्हें दवा, परामर्श और चिकित्सक के लिए इधर–उधर भटकने को विवश नहीं होना पडा। शिविर में विभिन्न

रोगों के तेरह सौ रोगियों की जांच और परामर्श दिया गया। शिविर में पाइल्स के 35, आंख के 450, त्वचा के 140, किडनी के 15, ग्रेस्ट्रालोजिस्ट के 55, यूरोलोजिस्ट के 27, कार्डियोलोजिस्ट के 100, सामान्य रोग और हार्मोन के 250, मस्तिष्क रोग के 55, जाइनों के 40 और ईएनटी के 130 रोगियों की जांच कर चिकित्सकीय उपचार किया गया। इस दौरान उदयपुर, मुंबई बैंगलोर से आए चिकित्सकों ने उपचार किया। सुराणा सेठिया हॉस्पिटल मुंबई और गीताजंली हॉस्पिटल, उदयपुर के सहयोग से आयोजित इस शिविर में श्रीनाथ इंस्ट्रीयूट के विद्यार्थियों ने सहयोग किया। इस दौरान लांबोडी भिक्षु परिषद के गोटूलाल, मुनि रजनीश, अनिल कोठारी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के मनीष मोयल, कमलेश भाटी भी मौजूद थे। शिविर का आचार्यश्री महाश्रमण ने भी अवलोकन किया। संचालन नवीन चौरडिया ने किया।

अमृत महोत्सव

जय ज्योतिचरण
चार्य महाश्रमण
मृत महोत्सव
९ सितम्बर २०११
केलवा

मण अमृत महोत्सव

जय जय महाश्रमण
परोपकार को
समर्पित साधन
के ५० वर्ष
अमृत महोत्सव
Photo By Bablu-9950520505

अमृत महोत्सव

जय जय महाश्रमण
पंचाचार की
आराधना का
उपक्रम